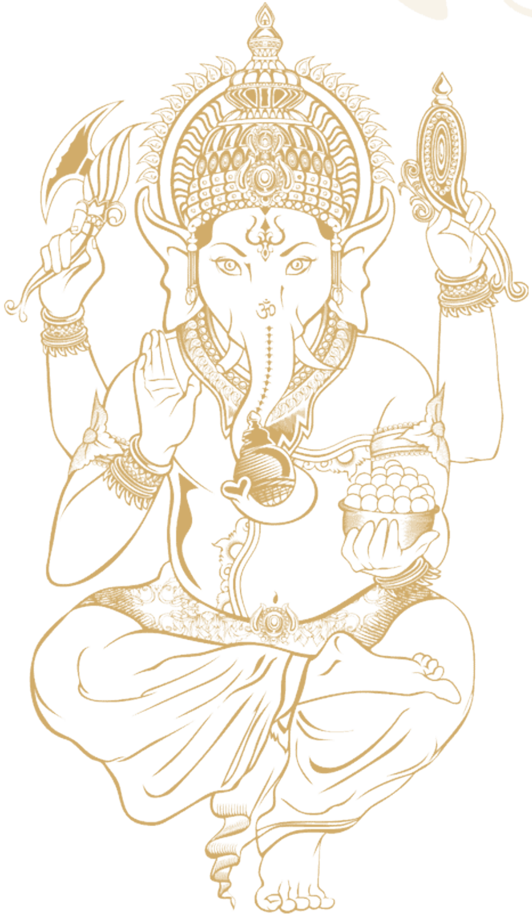

Gorav puri

Jaspreet kaur

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121727401

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121727401 Date: 27/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/03/1994	जन्म तिथि	20-21/03/1999
रविवार	दिन	शनि-रविवार
घंटे 20:17:00	जन्म समय	01:40:00 घंटे
घटी 34:14:46	जन्म समय(घटी)	48:02:11 घटी
India	देश	India
Panipat	स्थान	Faridkot
29:24:00 उत्तर	अक्षांश	30:42:00 उत्तर
76:58:00 पूर्व	रेखांश	74:47:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:08	स्थानिक संस्कार	-00:30:52 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:35:05	सूर्योदय	06:35:50
18:28:11	सूर्यास्त	18:41:41
23:46:49	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:35
कन्या	लग्न	धनु
बुध	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
मीन	राशि	मेष
गुरु	राशि-स्वामी	मंगल
उ०भाद्रपद	नक्षत्र	भरणी
शनि	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
4	चरण	2
शुक्ल	योग	वैधृति
बालव	करण	वणिज
ञ--	जन्म नामाक्षर	लू-लूसी
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन
विप्र	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	चतुष्पाद
गौ	योनि	गज
मनुष्य	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	मध्य
सिंह	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 4वर्ष 3मा 28दि		23:27:20	कन्या	लग्न	धनु	06:24:49	शुक्र 13वर्ष 2मा 6दि	
शुक्र		29:00:55	कुंभ	सूर्य	मीन	05:55:31	चन्द्र	
11/07/2022		13:37:45	मीन	चंद्र	मेष	17:52:40	26/05/2018	
11/07/2042		11:03:45	कुंभ	मंगल व	तुला	18:19:42	26/05/2028	
शुक्र	10/11/2025	02:04:27	कुंभ	बुध व	मीन	03:56:08	चन्द्र	27/03/2019
सूर्य	10/11/2026	20:36:35	तुला व	गुरु	मीन	14:28:18	मंगल	26/10/2019
चन्द्र	11/07/2028	12:27:26	मीन	शुक्र	मेष	09:05:15	राहु	26/04/2021
मंगल	10/09/2029	11:27:32	कुंभ	शनि	मेष	08:15:48	गुरु	26/08/2022
राहु	10/09/2032	01:53:33	वृश्चिक व	राहु व	कर्क	27:40:48	शनि	26/03/2024
गुरु	12/05/2035	01:53:33	वृष व	केतु व	मक	27:40:48	बुध	25/08/2025
शनि	11/07/2038	01:36:34	मक	हर्ष	मक	21:26:33	केतु	26/03/2026
बुध	11/05/2041	29:04:23	धनु	नेप	मक	09:55:46	शुक्र	25/11/2027
केतु	11/07/2042	04:15:00	वृश्चिक व	प्लूटो व	वृश्चिक	16:38:24	सूर्य	26/05/2028

व – वक्री स – स्थिर

अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:46:49 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:35

लग्न-चलित

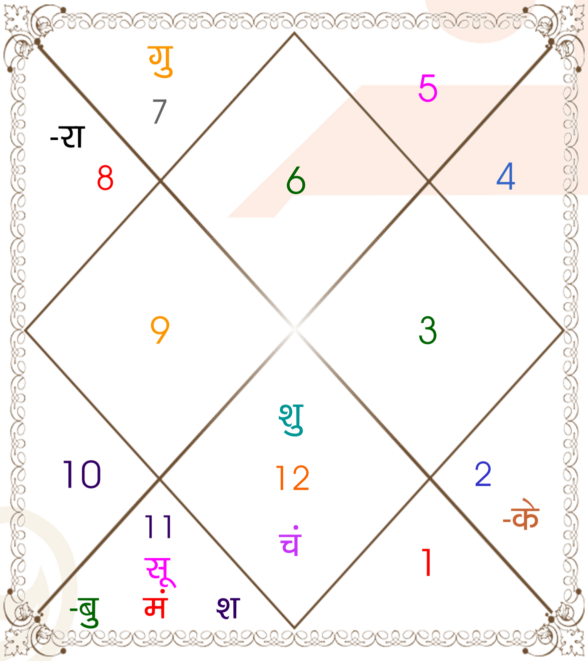

लग्न-चलित

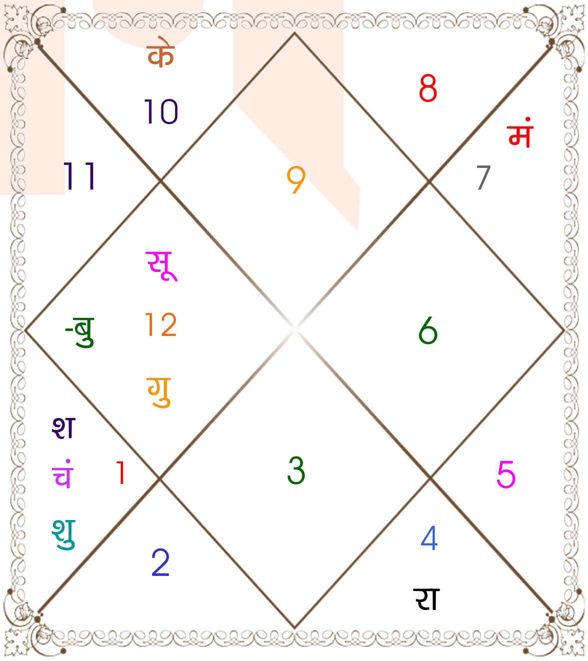

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गौ	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	17.50		

कुल : **17.5 / 36**

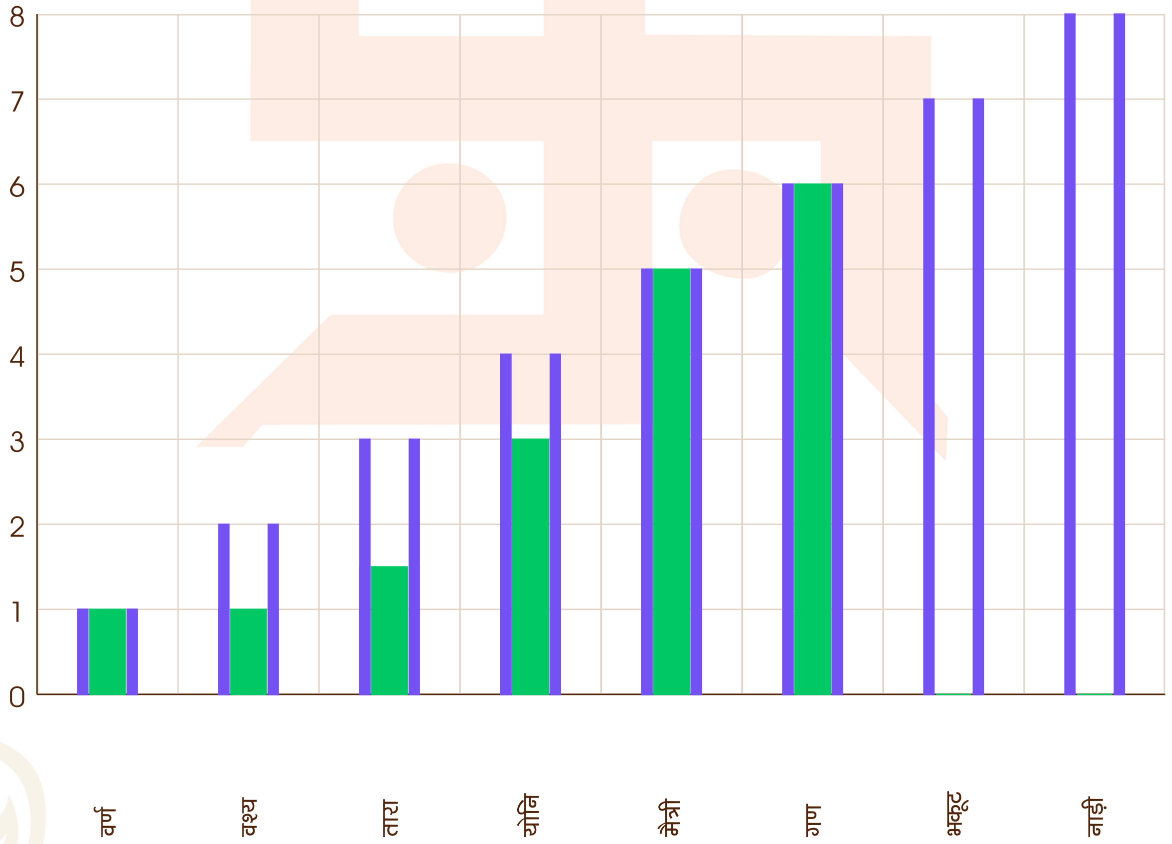

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ळवतंअ चनतप का वर्ग सिंह है तथा श्रेंचतममज ंनत का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

ळवतंअ चनतप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

श्रेंचतममज ंनत मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

ळवतंअ चनतप तथा श्रेंचतममज ंनत में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ळवतंअ चनतप का वर्ण ब्राह्मण तथा श्रेंचतममज ंनत का वर्ण क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके प्रभाव से श्रेंचतममज ंनत में अपने पति के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी। कभी-कभी क्षत्रिय खून की गर्मी भी समय-समय पर उबाल मारने के कारण समय-समय पर श्रेंचतममज ंनत आक्रामक व्यवहार कर सकती हैं हालांकि उनका व्यवहार कभी भी अनियंत्रित नहीं होगा। श्रेंचतममज ंनत सदैव अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भली-भांति करती रहेंगी तथा वे सदैव प्रशंसा की पात्र रहेंगी।

वश्य

ळवतंअ चनतप का वश्य जलचर है एवं श्रेंचतममज ंनत का वश्य चतुष्पद है। अतः यह मिलान औसत मिलान ही है। जलचर एवं चतुष्पद सामान्यतः एक-दूसरे के लिए सम हैं। दोनों के बीच न ही प्रेम की भावना होगी और न ही शत्रुता तथा दोनों का प्रकृति में स्वतंत्र अस्तित्व रहेगा। कुंडली मिलान में दोनों के दृष्टिकोण, सोच एवं व्यवहार में पूर्णतः भिन्नता रहते हुए भी विवाह को स्वीकृति प्रदान की गयी है क्योंकि दोनों एक-दूसरे को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचायेंगे तथा अपने-अपने तरीके से अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

ळवतंअ चनतप की तारा वध तथा श्रेंचतममज ंनत की तारा क्षेम है। ळवतंअ चनतप की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ळवतंअ चनतप बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। ळवतंअ चनतप को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु श्रेंचतममज ंनत लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

ळवतंअ चनतप की योनि गौ है तथा श्रेंचतममज ंनत की योनि गज है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का

वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ळवतंअ चनतप एवं श्रेंचतममज ंनत दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ळवतंअ चनतप एवं श्रेंचतममज ंनत के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण ळवतंअ चनतप एवं श्रेंचतममज ंनत जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ळवतंअ चनतप का गण मनुष्य तथा श्रेंचतममज ंनत का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे।˙ तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

ळवतंअ चनतप से श्रेंचतममज ंनत की राशि द्वितीय भाव में स्थित है तथा श्रेंचतममज ंनत से ळवतंअ चनतप की राशि द्वादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके कारण ळवतंअ चनतप गुस्सैल एवं लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। श्रेंचतममज ंनत समझौतावादी, सौम्य एवं दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर ळवतंअ चनतप शाहखर्च, लापरवाह एवं अय्याशी में पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

ळवतंअ चनतप की नाड़ी मध्य है तथा श्रेंचतममज ंनत की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में ळवतंअ चनतप एवं श्रेंचतममज ंनत का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

ळवतंअ चनतप की जन्मराशि जलतत्व युक्त मीन तथा श्रंचतममज ंनत की राशि अग्नितत्व युक्त मेषराशि है। जल एवं अग्नितत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनमें स्वभावगत विषमता रहेगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी अतः यह मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

ळवतंअ चनतप की जन्मराशि का स्वामी बृहस्पति तथा श्रंचतममज ंनत की राशि का स्वामी मंगल परस्पर मित्रराशियों में स्थित हैं । अतः इसके प्रभाव से इनके दाम्पत्य संबंधो में मधुरता रहेगी तथा परस्पर प्रेम आकर्षण सहानुभूति तथा समर्पण का भाव होगा। साथ ही सुख दुख में एक दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। ये दोनों अच्छे मित्रों की तरह एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः मतभेद एवं वैमनस्य के भाव की न्यूनता रहेगी तथा एक आदर्श एवं सौभाग्यशाली दम्पति के रूप में अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

ळवतंअ चनतप और श्रंचतममज ंनत की राशियां परस्पर द्वितीय तथा द्वादश भाव में पड़ती हैं शास्त्रानुसार यह एक भकूट दोष माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभप्रभावों में न्यूनता आएगी तथा अशुभ प्रभावों में वृद्धि होगी फलतः आपसी संबंधों में यदा कदा तनाव मतभेद तथा विरोध के भाव की उत्पति होगी जिससे दाम्पत्य संबंधो में तनाव उत्पन होगा तथा पारिवारिक अशान्ति भी बनी रहेगी परन्तु ळवतंअ चनतप और श्रंचतममज ंनत दोनों बुद्धिमता एवं सामंजस्य की प्रवृति का भी अनुपालन भी करेंगे।अतः अशुभ प्रभावों में न्यूनता आ सकती है।

ळवतंअ चनतप का वश्य जलचर तथा श्रंचतममज ंनत का वश्य चतुष्पद है। अतः इनमें नैसर्गिक विषमता के कारण इनकी अभिरूचियों में अन्तर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएँ भिन्न होंगी। साथ ही कामसम्बंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं संतुष्ट रखने में असमर्थ रहेंगे। अतः सम्बंध तनाव युक्त रहेंगे।

ळवतंअ चनतप का वर्ण ब्राह्मण तथा श्रंचतममज ंनत का वर्ण क्षत्रिय है। अतः ळवतंअ चनतप की प्रवृति धार्मिक तथा शैक्षणिक कार्यो में रहेगी परन्तु श्रंचतममज ंनत साहसिक तथा पराक्रमी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी फलतः कार्य क्षेत्र में भी स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

ळवतंअ चनतप और श्रंचतममज ंनत की तारा परस्पर सम है। अतः इनकी आर्थिक स्थिति पर तारा का प्रभाव विशेष शुभ या अशुभ नहीं रहेगा। लेकिन इनकी राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती हैं जो एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है तथा आर्थिक स्थिति पर इसका विशेष दुष्प्रभाव पड़ता है। परन्तु मंगल का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव सम रहेगा।

अतः सामान्यतया ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत समृद्ध एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे।

भकूट दोष के प्रभाव से श्रेंचतममज ंनत की प्रवृति अधिक एवं अनावश्यक व्ययशील रहेगी तथा भौतिक साधनों पर अनावश्यक व्यय करेंगी। साथ ही ळवतंअ चनतप भी जुए या अन्य व्यसनों से अधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः आर्थिक स्थिति की सुदृढ़ता के लिए ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत को अपनी ऐसी प्रवृतियों पर नियंत्रण रखने की कोशिश करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत दोनों की नाड़ी मध्य है। अतः इन दोनों पर नाड़ी दोष का प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से दोनों का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इससे ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत दोनों उदर संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे जिससे लीवर विशेष प्रभावित रहेगा। परन्तु मंगल का इनके स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः इससे कष्ट की गंभीरता में न्यूनता आएगी परन्तु सामान्य कष्ट वे समय समय पर प्राप्त करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस दोष के प्रभाव से ळवतंअ चनतप को धातु संबंधी तथा श्रेंचतममज ंनत को मासिक धर्म संबधी परेशानी हो सकती है। अतः उत्तम वैवाहिक दृष्टि से यह मिलान अनुकूल नहीं होगा जिससे यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में श्रेंचतममज ंनत के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन श्रेंचतममज ंनत को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में श्रेंचतममज ंनत को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ळवतंअ चनतप और श्रेंचतममज ंनत का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

श्रेंचतममज ंनत के अपनी सास से संबधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ से श्रेंचतममज ंनत किसी भी अनावश्यक समस्या या असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। श्रेंचतममज ंनत के हृदय में उनके प्रति सेवा भाव रहेगा तथा अपनी सेवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्यपि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा सामान्यतया संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके ससुर से श्रेंचतममज ंनत को विशेष स्नेह सम्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी तथा के द्वारा श्रेंचतममज ंनत को समय समय पर समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों से श्रेंचतममज ंनत के अत्यंत ही स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण संबध रहेंगे तथा उनसे इन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी समस्याओं तथा सुख दुख में एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इस प्रकार श्रेंचतममज ंनत के सास ससुर का दृष्टिकोण सामान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

ससुराल-श्री

ळवतंअ चनतप के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को ळवतंअ चनतप अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी ळवतंअ चनतप के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण ळवतंअ चनतप के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।